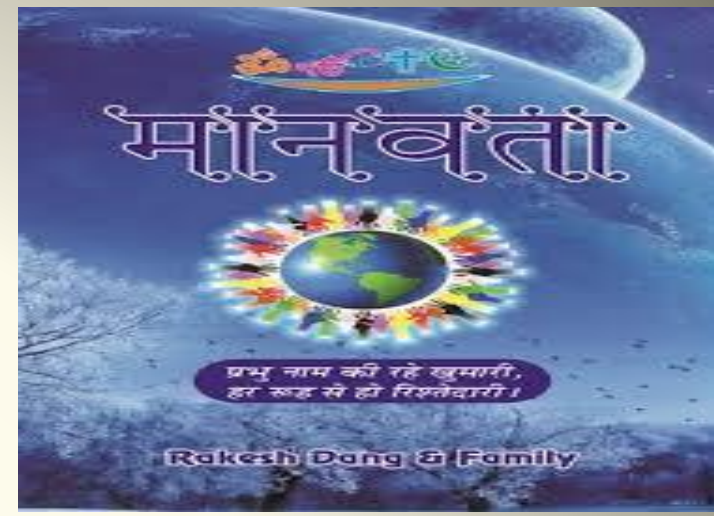


मनुष्यता— मैथिलीशरण गुप्त



मनुष्यता—



विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी ।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए ।
वही पशु—प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

मनुष्य वही है जो अपने जीवन में विशेष कार्य करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हो। पशुओं की प्रवृत्ति अपने लिए ही होती है लेकिन मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे।





क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी ।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर—चर्म भी दिया ।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥



रंतिदेव ने थाली भूखे साधु को दे दी ।
दधीचि ने वज्र बनाने के लिए अपनी अस्थियां
देवों को दीं ।
शिवि ने कबूतर की रक्षा के लिए अपना मांस
दे दिया ।
कर्ण ने कवच—कुंडल इन्द्र को दिए ।



रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥



अहंकार नहीं करना चाहिए। हर अनाथ की रक्षा करने वाला ईश्वर ही है। धीरज न रखने वाला ही भाग्यहीन होता है। हमें मानवतापूर्ण व्यवहार ही करते रहना चाहिए।

समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े—बड़े ।

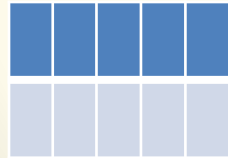
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,

अभी अमर्त्य—अंक में अपंक हो चढ़ो सभी ।

रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।

विभिन्न देव तुम्हारी रक्षा के लिए तत्पर हैं । एक दूसरे के सहयोग से आगे बढ़ते हुए अपना व दूसरों का विकास करो । एक दूसरे के सहयोग से उत्थान करो, ईश्वर को प्राप्त करो ।



- यता

‘मनुष्य मात्र बंधु हैं’ यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है ।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्यभेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं ।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।
चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए ।
घटे न हेलमेल हाँ, बड़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी ।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।।



परमपिता परमेश्वर की
संतान सभी एक हैं— यही
सबसे बड़ा ज्ञान है ।



मनुष्य के अतिरिक्त
अन्य पशु —पक्षियों के
प्रति भी प्रेमभाव रखो ।